

सज्ज ४ विषयज्वार ५ उर्गधिदेयिउ तथाकोज्वर द्रष्ट  
 राम भियं गताउ गन्याको ६ प्रकारकाहु छन् ॥ रसप्रकार  
 स रससंवे भेदजोरी कथागन्तु जनाम गन्याकोज्वर १३  
 ॥ ४ ॥ प्रकारकाहु छ्याति संवे जोरि पचीस प्रकारका जोरहु  
 छन् ॥ ॥ इति ज्वर गाराणा ॥ ॥ पित्त रोगः कफ रोगः



उपगन्तोमस्वधानदाः ॥ वायुनायत्रनियतेनत्रयव  
राम निप्रियवन् ॥ इवचनात्त्रिभुदेवेयुवात स्पष्टव  
॥ ४ ॥ तवत्वात्प्रत्युक्तोक्तस्वरपुत्रावदनीरूप्यते ॥ ॥  
अस्याथर्व ॥ पीतपैगुदकफपनीयैगुतद्वपनी  
पगुदसातपावातुपनीयैगुदनातसअथवायु

चाऽघोऽयुक्तगारिमानुवातस्वर ॥ ॥ पंचमतीवनात्तस्मा  
कतन्थैसहपौकरै ॥ पर्वप्रेदसिरकपनीरुतीपवन  
स्वर ॥ ॥ ॥ अस्याथर्व ॥ ॥ पंचममुत्तवत्तुत्तस्मागहत्  
पुक्तुमत्तपातीकाथदिनुसंधीमान्यादिरकका  
युक्तवातवदुत्तर ॥ ॥ ॥ विन्नादिकाथ ॥ ॥ ॥ काथत



लकयुक्तः गाढ विह्वलिविधीयते ॥ १०० ॥

नैः ॥ ॥ वैश्व कल्पसिद्धिं सारश्रवणीं दातुं वीतथा



वामिकं गोदमुमना ~~प~~ पाकभेदभातायते ॥ प्रतापेव  
 एष ~~क~~ कमुनामुदात्तसुदसुका ॥ विगविएकृत्रनेत्रं चैति  
 के भवेदवयः ॥ जलपयगवडो ज्वरहो मृत्तिकाहो तिद्राभंगहो  
 ॥ ८ ॥ अतिवागचिहो धानिज्योठमुषराषहति लुकाहति नवध  
 वसाहदाहाहो. सवत्रिभंगपादलिताहो गर्भिवडोहो बहुतेवह

वरावमुषाचिहोहो मृकहोतित्रवहुतेगुर्भिकोतेजं गिगानुषाव  
 जेहोमुत्रविष्वापहे. जेहोसाधापनिमहे. गहुन. हिगकाकाग  
 नृधुमावमृत्ता. नृधु. नृधु. तमि. नृधु. नृधु. ॥ १ ॥ अधविनज्व  
 लकिधीत्ताह. ॥ नृधुवागलुकाह. ॥ कालिगकदु. नृधु. नृधु. नृधु.  
 कदुकोहि. ॥ पकंशराकहि. पीतं. पाव. गपै. ति. क. नृधु.  
 ॥ अन्वार्ध. ॥ इदुपवका. पृ. लको. मृ. ल. सु. धो. वा. दु. नृ. पा. पा. क



टिकि हति प्रोषादि को का थं एषो प्राउसाग वाउ प्रायनगरी को वि नन  
 ह्य ॥ इति कनिगादि का थ ॥ सकं एव पु एहति क कौ वैति कन  
 हं ॥ अस्माथ ॥ सकं एव पु क भयो को क का यदि तं ज्वा क के डे  
 एम सु ही त कारि ह्य ॥ का धा मया प की ह का वु ति न का थं स श म्मा  
 क क नं वि द घा न ॥ प्रउ म नु क वि प दा ह शो क न त ह मा वि ते  
 वि न भवे रे न ॥ अस्माथ ॥ रा य ह ए के नु वा मु चो क नु के ए ज ह

अस्माथ ॥ ~~वयं वयं कं~~ दित क नु के स नु न म के न म दि म रा ५  
 वय न ये हि मधु. वा व क नु कि नो वा शो स ती प्रो व धी स्वर स वान  
 दा ह न र सां कि हो स वी क र ॥ इ ती व न मा दी ग न ॥ ॥ अ सि तो नी  
 सी प र्प तो प्रा त धा न्या क नं ड ल का थ ॥ पी त स्य म य वी रा दं न ड र्द ह  
 तो घोरं ॥ अस्माथ ॥ वा सि रा वी जी रो पानी मा हा ध नी प्रो त नु  
 ध्या को का थ ग रि वा नु ग्न त र ये दा रु व डो जो र रु ह ॥ ॥ प्र प्य त धा



न्यजतं प्राप्तवितं ससर्करं धृतं श्रुतं दहं स मे यती प्रवृत्तं मपितं ररात्  
 अस्याथ वा सीयानी माह धनं भाभी जाह्वा उसी गधानु श्रुतं दहं हर  
 राम ॥ अमुपिवै शुसीतै वापुता सपुत्रवै दिहेतुः ॥ वदति पस्मभायेन के राम  
 १२ कं दानेन कस्य च ॥ अस्यार्थ ॥ वडो पला सकोपात् ननु वापात ग्रामि १२  
 ला मापिन देहपद्य सनु किं वा वरका बात को फेन की विनीम  
 को माव को रस अस्याद्य सनु दाह हर ॥ तदुपर स हन हुते ता उत्ते

नुगारि सुतास्य गभीरताम्रकांशादि पात्रं प्रशिषायनामौ ॥ तत्रा  
 नुधारा वहना पतती दाहं नरितं स हिता ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ इत्ता राम  
 नुगारि सुहृन्मनुष्यकानां भीमात्ता तावा को के कासा के को स्वारे  
 गै हो भाडा रावत ता लाना हाव रुते पानी को धारे दिनु दाह तोर हर  
 ॥ ॥ सत धौत घुनी भंग श्री वडा रिते पन ॥ तना द्रव स्त्रा  
 वरणी इति वात थदा हनु नू ॥ अस्यार्थ ॥ हगार फेरा धोया को



१५  
 १३  
 श्री ३ अंग घसनु किंवा श्री वंद्यो रि रत्ने पनगर्नु कींवा नी  
 जाया को लुगात श्री दा वनु वायु वात हरण ॥ ॥ श्री हूंग त को म  
 सोम सुजिन्व दायत ॥ केसर मा तुलंग स्य मधु सैध वस युत  
 ॥ अर्थ ॥ श्री भा वि वे तात वि वे गला वि वे दु म होत सुसा ॥ वि  
 मीरा को कल के सरा मरु सैध वयुक्त सिरते पतगर्नु ॥ ॥ श्री हू  
 वदि रोग हर ॥ हरित की प्रीय गुग्गुलि पिप्पली तोष मेवर्व ॥ ॥

दा म हरि द्राते जो हू स हौद्र सुवधान ॥ एतेन क दु भावध सुवरे  
 गभ साम्यती ॥ वध्वं वि स दता मेती मक्त द ह्वना य ता यते ॥ अर्थ  
 हरे मात का गुनु पिप्पली तोष को को घा छा पुत्रो रि मुर एती ए  
 कत्र गरि वुरा ग रौ मरु युक्त गरिते ह मुद्रा दिक कु ॥ ॥ रागर्नु मु  
 व कोती तो हू दो सवै मुष को रोग हर एती एकत्र गरि वुरा ग र्नु  
 मरु युग क गरिते ह मुद्रा दिक के मुष नी मंत हो माग वि वे स्वी हो



राम  
१८

॥ मुहु योषो नो देय सीत पापैरी कनो रे ॥ पित्त मया मामु  
को पाक्यवानु हत कादिद ॥ घुर्त पात प्रसस्त व सर्वे धीपित  
रोगीणां ॥ मरिचं मधुरं तक्रं सीतायु संवपाययेत् ॥ अथ  
॥ सर्व पात रोगी कत घुत को पान प्रसस्त द मा रिवमिद सह  
वाकते युक्त गरि पित्त रोगी कन पावन देनु ॥ स्वादु ती ककवाया  
नी भोजनान्यो प्राधानीव ॥ कर्पूर वरुनो इति रनुलेयनं करोक्ष

राम  
१८

रोग ॥ अथ ॥ स्वादु वस्तु ती तो व सुका का धले भोजन ले प्रोष  
धले ती नू ॥ कर्पूर ले श्री व उर्व दन उ सिर सती ले मे के रिते पगनु  
॥ सर्वो वी सितलो वो रिव स्वादु रा वि रे व नमः ॥ रम्ये सित गृ हे वा  
स कर्तव्य पीत रोगी रागि अथ ॥ पीत रोगी कन दित ले उर्व र ग  
नु स्वादु व सु सी त ले व सुजे रे रे व न ग नु स व नु सु र सित ल दु वा  
गृह विषे व सानु ॥ इति पीत ज्वरे नी पान ग्रंथे का थं वु टि ॥ ॥







राम

१०

बसंत सु मधमावन मीती ॥ प्र स्वी दु स्थाप वि पो म व्री पो म वि वे  
मी श्री त म या को पा व न हित कारि ह म नी वर का दि ॥ रि मि ले म  
या को ह ॥ दी ते डे वा य र्थ ए वारि वा ह म नी म्य सु ठि ज नी त क वा  
य स मि रा पित ज्व र ज र सा रणि करो ती म ड र व नु प व म ड ॥ प्र स्था र्थ  
॥ गु जो कै र सा मो थो क ता ती तो सु ठो र ती का थ गारि वा नु वा त  
दे वि म या को ज र ह रै ॥ इ ती प व म ड ॥ व्री फु ला रा त्म ली रा ह मां

राम

१०

१०

गारु त वृ क्षां उ र्व क ॥ भू त मं वु ह रे त्या स वा त पित त स्य म जो र म्  
॥ प्र स्था र्थ ॥ व्री फु ला शि म ल रा ज वृ क्ष रा स्ना नी हो त गु जो र्थ सु रा  
॥ इ न को का थ वा न वा ता पित दे वि म या को ज र ह रै ॥ इ ती व्री फु ला दि  
का थ ॥ कि रा त गी त म म न ड्रा क्षा मा म लो क सा ठ म नी का थ्य पि  
ता नि त जे त का थ स गु ड पि वे त ॥ प्र स्था र्थ ॥ म नी म् गु जो र्थ व थ्य व  
ली क वु र ॥ इ ती का का थ गु ड ते पु रा त ग रि वा नु वा त पित जो र



हरे ॥ वना भाग्य नितैरंडवस मोतिरपि मेय ॥ उपकुल्या कति  
 वैर के कार्य वपि वतत ॥ पर्व भेद शिर के वात पित ज रं ज न ॥ प्र  
 साध ॥ वन वन भाग्य गुणो अरे उन्नीष उन्नीष शिर के रुना पीज्य राम  
 २१ लास थोही वैर हती को का थ वन संधी २ मया सि र की लावा  
 तीय नंबर हर ॥ ॥ इती वन दिका थ ॥ आर ग्य फली मुस य वि २१  
 म धु क मे व ॥ अ सर म म पा वै व हरि दा ह स कू पा ॥ प टेल पी

स पती वगुल द आवा रु हि का म रु स नी पात क कं ठ ग्र ह तं नि सि रो  
 रु गा ज व त ॥ प्र सा ध ॥ कं ठ का र गु नो मो थो व न न प कू का र  
 क ना ती तो कै रु ना पु कुर म ल क पु के इ प्र य व नी म य स र स थो व न  
 भा गो ल माल र ती को का थ वा सि र रि म व डो र शि त स्वा स गु हा  
 दा रु म म न त म का सो इ हा ल म ल पे त ड डिया वा धु कि र न नी पात कं ठ का  
 र ग तं द्रा सि र रोग इ ती रोग सर ॥ इ ती वृ ह दी द्रा दि ॥ आर गो ध ग्रं थी



हाम

१५

कमुस्ततीताहारतकिमीकाथेतकमाय ॥ शामसभुलेकफवात  
 भुलेह्वरेरुतोदिपुनपावनम् ॥ अस्मार्थ ॥ आरोग्यमेवक ॥ लह्म  
 नीतवातककातीकधुलेसरधासकासारुवीविं दु विवधे ॥ हितं ज  
 लंदिपुनपावनं वयतालमुठिपुत्रापिप्यनीनी ॥ अस्मार्थ ॥ प्रश्नोत्तर  
 सधोद्द्रयवपीप्यताएतीकाकाथलेतवातकक सुलसासका  
 नित्प्रस्वीविर्नामितीरोगहर ॥ दिपुनपावनं ॥ पीतसत्तासवा .

राम

१५

नीर्यज्ञदापवास्थिभुलीनी ॥ कपरवातह्वरेवेदकालयन्तुविधान  
 वीत ॥ अस्मार्थ ॥ पीनालभसवाहिरुहोऽप्राप्तमन्मासंधीसंधी  
 मान्माभुलककवातद्वरइतीरोगविभेमनीपटोलादि काथयोतीन  
 शर्तु ॥ इतीपटोलादि ॥ नीन्वामताविश्वददरुकमुफली  
 कटुकापवा ॥ कवापीपामयेनाभुवातहोममतापल ॥ पवमभिस  
 भुलकासारोवकदिउत ॥ अस्मार्थ ॥ नीमभुतोसुथादेवारकाफ



तू को सी पाक कुकी वो हो ॥ इती पटोलादि काथ ॥ नरु प्रथ ॥  
 भाग्य दव बाधन्य कर फलै सामया विप्रयुत कि काथो हि मधु कुट  
 ॥ कय वाता रो ॥ पीनो हि का गो भगल गृहात् ॥ खस का ल पुही  
 ॥ लया त र निव शनी ॥ मरु प्रथ ॥ देजार के रुना वन भागो मेथो वो  
 ॥ धनी मो को फल रु रो भु थो क रु ॥ इती को का थो हि इम हयु गत  
 गदि वागु क फवात नर गा थ गला राग स्वास का स प्रमि ह ॥ इती रोग

२५

राम

२५

गुजो नी मधनी यो जो ठ मंघु के वन्दन ॥ इती एक न रा ॥ व नो र  
 गुतु वा दा हा थु रुबी ह दि ॥ इती रोग साहित सर्व ज्वर हर ॥ इती गुडु व्यादि  
 जरा रिगरा ॥ गुडुबी की त्रधान्यां की वंदन क इरो सिनी ॥ तृ हमा दा हा रुबी  
 ह दि पीतलो म त्वरा पर ॥ म स्या थ गुजो बी तो धनी यो वंदन क इकि ॥ इ  
 ती को का थ वागु त वा दा हा थु रुबी ह दि इती रोग साहित पीतलो म त्वर हर  
 ॥ इती गुडु व्यादि ॥ गुडुबी वन्दन पद न ना ग रेद्र पवा सक ॥ प्रमया प्रमया



रज्यधो शो वारा वा था धावा दरो रु नी क बायी पाय ये दे धी विप्र तो र्ग  
संभृत ॥ तद्राका सखराश्वा सपी पासा दा रुना सन ॥ विरामत्रा नील विवर्ध  
रज्य की दो वरुप भवव ॥ गुड्या डि गरोगा ह्य बावनो द प्रन पर ॥ ॥ अ स्था ध  
१८ ॥ गुजो वन्दन पद्म का क सु ठो इद्र यव अ सु रा रु रि मार ख व द्रा सिर वा पुला  
लाधनी यो मुथो क इ कि ॥ इ ती का थ गरि पी प्य ला को नु रा यु क्त गरि वा नु न  
द्रा का स जो र श्वा स सु वा दा हा मुत्र त था वि द्रा वि वं ध त्री दो न इ ती रो ग रु र ग

दिपना पावना हो ॥ ॥ ६ ह्रस्वः उच्चार्यते ॥ प जेनी नीनुमं  
द्वित्री कला मधु कंवला ॥ साधी तो यंक काय त्या निज ॥ वेस  
रे ॥ ॥ अथाथ परश्रोत ॥ ती मंत्री कला महबल ॥ इती को  
का थले पीतक मु देवि माया को जो रहर ॥ द्विती धन्य पढे  
॥ वस्तु के प्रेम का रूखता रहरा मृत तेने ॥ पठ लो धान्य के दै



काधो मधु समा युत ॥ कफ पीत ज्वर भूत दाह हृत् घ्राण नीच  
 ॥ अस्यार्थ ॥ इन्द्रजवकोत पञ्चकाश भूतो वदन गुतो मारुत  
 धनी पो रती को काध मह युक्त गरी पात कफ दाह पित्र  
 ॥ २५ ॥ इच्छुलकात पत्रको दाह एक रोग ॥ इति ॥ तेषां  
 स्वपठेत् ॥ ॥ अथ टैलु कपनाग ॥ गेहल कदुमे ॥ २५ ॥

हीरागि नागर चन्दन मुख पिप्पलि चूर्ण संयुत ॥ अमृताष्टकमि  
 त्पेतासित श्लेष्म ज्वर पट्ट ॥ अस्यार्थ ॥ गूर्जो ॥ इन्द्रजव २ निम  
 ३ पात्रो एवं कदुकी पञ्चोद चन्दन ७ सुथो ८ ॥ इति अष्ट  
 क प्रकार काशोष धक्काय गरिमाहा पिप्पली को चूर्ण धा  
 लि पातु पित्र श्लेष्म ज्वर हर ॥ ॥ अमृताष्टक ॥ कंठकाय मृ  
 ता भागि नागरे इयवासक ॥ अमिन्व चन्दन मूळ पठेत् कदु



रोहिणी ॥ कथाय पाय ये देव पित्रो अज्वरा पह ॥ दोहट  
 हता रुचि छुर्दिका स हडोग अलु नुत ॥ अस्या र्था ॥ पा कठका  
 शी गजो व भागो शुठो इदय व अरा निम्ब भु चन्दन सु थो गरुवर  
 कठु को इति श्रौय भ काथ गरि यानु पित्रो अजोर हर ह्यह  
 ॥३०॥ त्रिषा अरुचि छुर्दिका स स्वास हडोग अलु इति रोगे हर ॥ ॥३१॥  
 ति कठका रियादि ॥ ॥ सपत्र पुष्प वासायर सक्तो इति ता युत कफ

अस्या र्थ ॥ वात वला सक विभेक पर वात नरा विभे मन्त्रा को क्रीया गर्नु प्रह  
 प्रक विभे तक्षे भरुता क्रीया गर्नु ॥ अथाह सीत दो सीत दाहनी दानम् ॥  
 विदप्रेयरगे देहे हो अपि तेव्यवा स्थिते ॥ तेरां दुःखित हर्ष देह वाह न्वो प्र  
 वजायते ॥ अस्या र्थ ॥ दाहलो युक्त भया का देह विभे अ मितर ह विभे ग या का  
 हो अपि तिर स्वा का हनत र भो के ~~प्रध~~ सार विभे दाहा हो ॥ काप



दुर्दयदायी नृक्षमावातेव्यवस्थिता ॥ तेनो ह्मत्वंसरिरस्यारितत्वंकर  
 पादयो ॥ अस्मार्थ ॥ सरिरविषेजवपित्तदुर्दमयाकोहोक्षाम्प्रतविषे राम  
 होत सरिरगर्भहो हात पाव सीतलं हं ॥ कामेक्षे व्यापदानुदापितं ३३  
 वातेव्यवस्थिता ॥ हातलं नवगत्रस्य ॥ वो ह्मत्वंरुत्तयादयो ॥ अस्मार्थ  
 ॥ सरिरविषेक्षाम्प्रतवदुस्तहो पित्तप्रतविषे होत सरिरविषे सीतल हो  
 हातपाड विषे दास्तहो ॥ त्ववस्थौक्षो प्रनीतजो सीतमापौजतंतयो

तगर्भाको जलवानुपावनगरिदाहसीतवररुह ॥ दाहाङ्गी प्रतेष  
 विधीवत्कुर्यादाहविनाशनं ॥ अस्मार्थ दाहतेष्टुक्तं मया कामनुव्य  
 कहाहाहान्याडियायगर्भ ॥ मधुप्रा ॥ सीतमीशे रानी ॥ स्वपत्रा  
 भूतापीवा ॥ दाहवररतं मीमी मान्वामयेत ॥ हो प्रमेवव ॥ अस्मार्थ  
 ॥ मधुल इह विकारलेष्टुक्तगरिनी स्वकाकोरसपीईवाडेवमनगराड



नु साहजोरहर ॥ वाशिर्दार्तमधुयुक्त कंठादापि पपापित ॥ पापयेवा  
 मयदापिते स्मत् एमा प्रसा मती ॥ प्रसार्थ वीशा पानी लेषुक्त मधुखर सुकंठ  
 पर्यंत पया इव मन गराउनुत एमा शांत हो ॥ दादिम वयरलोध्र कपित्थं विजप  
 रकं ॥ पीकामुद्रिप्रलेपो यपी पाशादाहरा ~~डा~~ नम ॥ अर्थ ॥ दादिमव  
 मरलोध्र कपित्थं विजप रकं ॥ विमिराको जरोरुती श्रौ बध पी सीडिरले पगनु  
 त बादाहा हर ॥ वाप्यकमल हातिन्यो जल यंत्र गृहाश्रुमाना बंधव दना दधो गो

राम

३५

राम

३५

दाहदैवपरा मती ॥ प्रसार्थ ॥ कमले हा सावाउरिले नलं जलनेषुक्त मया  
 शुभगृहे वदनलेली स मया कास्त्रिले उग्र दारु हर ॥ तथा धवै धृजीवने  
 प्रमलेक मले रल सौ पृथ्वर सैस मवीत ॥ जलकेली कुत्ररुतै रुदिपीत ज्वरा  
 रुजोरुयत् ॥ अर्थ ॥ नीमलेक मले फुलकार सातेषुक्त मया कामराय  
 ले जलक्रीडा काकौक कले प्रत पित्त ज्वर देषि मया कोवर दारु हर ॥ सप्या  
 पत्रवप पत्रर वीता वाकसो वन सैस मकातार कसम स्फुरत्तरुकर



राम  
३६

विना नीतं गायतम ॥ आतापाश्र्वकालीको कीलक ता कर्ता कं वाता  
भासत कज्जराग जा दाहनी रा कुर्वतो अर्थ ॥ नुतन क मत का सप्याले  
दौतरि स गद्य ह्मा ले कु सु मले युक्त भया का वरा विषे विना स हित  
गात्र नाले सुगा का — मरा का को किल का स दलो सुले स दर कथा हाने व  
वर का वेत नाले दे वि भया को नी मल वायले स्तति फल हर ॥ शुभ्रा भुवि

३६

मधरे शाशिक करं सरं ॥ वन्दनै भ वीति ह स्त स्यात्ता यव्य पोरु  
ती ॥ अ स्या र्थ ॥ नुवो गद्य विरि मया का गदे वि षे वंदना का किं र  
ते युक्त भया का वन्दन ते व र्व भया का त स्मा गरु विषे सुत नुवडो  
ताय क न हर ॥ अ न्ये फल हर ॥ प्रयोगा सु पीत जोर प्रह रण ३







अम्भंगगर्गु सर्वसितहरः सुप्रो ह्यो मधु गोमूत्रैः तैः सेवै कोटी सितहा  
 ॥ सुरसाजकः सिंगुना पुले पोदतसंभव ॥ अस्यार्थः ॥ मन्ताता मधुः गोत्रस  
 त्तले सिंदनगर्गु अती सितहर ॥ सुरसाजक सिंगु इती को पातका ३८  
 रसले लेपगर्गु सीतहर ॥ लातानी शाकुर्व सुठि मती को वसववी का ॥  
 मुवाविमन सां सु तैलिके व मद्रो ॥ अम्भंगगो प्रहामे त दाह सीतवर  
 त्तरा ॥ अस्यार्थः ॥ लाहा हते पोः कतः तथोः मये तैलार मउहो को विज

मला श्री सउतेल मती करण वा पुलग रय स्क ६ गराग मही मा मिला  
 ई अग्नि मायका वनु ॥ सोतेलः अम्भंगगर्गु दाहसितवरहर ॥ इती मह  
 तं क्री तैल ॥ ला हा हरि द्रामती वरकत्क सैल विषादयेत् ॥ मद्रो नारनी  
 लेन दाहसितल्वरा यह म अस्यार्थः ॥ लाहा हते जो मये पो इती को क  
 त्क तेल मद्रो राका वै जाली पका वनु सोतेल अम्भंगगर्गु दाह सितजोरहर ॥  
 इती ला हा इ तैल ॥ स्वर्गी काकु म मती वर ला हा मवा विसो मधो ॥ इ



भिक्की रं साधीत तैलम म्यं गा दा ह. सित नर ॥ अथ स्याथ ॥ राजी का म  
 कुट्ट म पि टो. ला हा मुवा भु ठो टती थौ व ध इ द ते त ते सा धी त गै सी म्यं ग  
 नुं दा रु सित नर ॥ इती सजी का तैल ॥ इती ला हा दा हा सी त नरे ॥ अथ ३६  
 ३२ इती त पित्त स्य त क्ष रा म् ॥ रु हा स त र ग र त व र क्त लो ख त ता रु वी ॥ इ  
 दि तो मो त व र क्त इ ति ता पित्त स्य त क्त ॥ अथ ॥ अथ पानी मुख दो व प्रा व  
 न वा हो. अथ मरी हो र क्त प्रा वा हु त अ रु वी हो इ दि तो मुख मुख हो तो र हो क

इती हो र ता ल ता ल त ता त पी त तान् ॥ अथ ॥ त्पे डि म धु क पृ थ व  
 सरा द्या व रु न द यी ति डि त का रा का थं सित पित्त रु रं प रं अथ ॥ त्पे  
 डि म धु को फु ले रा द्या श्री वं न्द न र क्त व न्द न सिं वा ली दि ध्य ता र ती को का  
 थ ग रि मा नु सी ता पित्त नर ॥ अथ अ म् पित्त नर ॥ अवि पा क क्त म क्त  
 स सित्त मा स्य व गै ॥ अ रु वी कं ठ हा ह मो रु मु र्दा क वि द्रु म ॥ अथ  
 अ न पा क न हो र ता नी हो रु क्त हो ती तो मुख हो. अं ग रौ हो अ रु वी हो कं ठ



वीवे ह दय वीवे सरु हो मोरु हो मर्दा हा हो कहि विषे ध म हो ॥ ती का र  
 क ड को क र आ स म ह स्त्रा ता प र ह प्रता पो व क ते द श्र म्र स्र पित्त स्य ल क्ष त म  
 न ॥ ४ ॥ अथार्थ ॥ ती तो अ म पि रो ड कार हो आ स हो म व दे त्र म्पा वी ४.  
 ४. भ्रा व ग म हो त्र वा हो व ड ते व र र ह दय विष व र य क या हो व य स्ता ल क्ष  
 त ह त म्र म्र पित्त त्रा त ॥ व ता धी मे व के चा म्र पी ते क र मा र र ह रि त्ता ॥  
 म के ती रा प्य म के क र म्पा वी हो मा स पि दित ॥ अथार्थ ॥ वा त का

प्र स र्ब न य ने वै व म्र मा धु ये मे व ॥ क फो त र स्य ह पा रा सु त्री या त स्य ल क्ष ये  
 र ॥ अथार्थ ॥ त उ ता हो ग ड दा व व न हो र त्री वि नी द्रा म या प नी म्पा  
 वा र रिया कै र ह र म व ग ती ये हो र स्ता ल क्ष रा हो त क फो त र स त्री या त द्रा  
 त्र ॥ ४ ॥ वा त व पि ता धी को वै स्य स त्री या त प्र क प्य ती ॥ त र य म र म र ह र  
 म व शो व म्र मि ती का ॥ म्पा रा र वी त द्रा क र स र स म म्र मा ॥  
 म्पा र्थ ॥ वा त पि त्त म्र धी क म म्पा को र स्को स त्री या त क पि त् र हो त म



५०. रहो सारि रमा वडो तन क होत बा हो मुख भु क न्ये प्रमिली का हो हो पे ८ द  
 डि न्या हो रु वी न हो ग्रा वा ८ रि न्या हो का स हो भाल हो भ्रम हो थ क का  
 ई हो य सा त क्षरा हो त पीत श्रेष्ठा धी को यस्य सत्री या त प्र कु प्यती ॥ ४ ॥  
 अत र्हा हो ब हि सित र त त्यत र मा व व द्रु त ॥ रु त ते द क्षिणे पार्श्वे स व सो ष म  
 ग त ग्र हा ॥ श्री क लं क क कित व क द्वा कं ८ भु त य ते ॥ वि द्मे द भा स हि का  
 थ व द्रु ते स प मी ली का ॥ वि भु क त र व ते नाम्ना स त्री या ता व द ह ते ॥ ५ ॥ य का म र्थ

पीत श्रेष्ठा धी क म या को ज स्को स त्री या त क पित हो त अंत र्हा हो  
 ॥ वा हर सित हो त बा हो दा हि नु को षो ष म भु क ग हो स मा त न्या हो  
 क क पित क न क रु ले थ क ॥ घा टि दु व वि द्वा को भे द न हो भा स व द ग्रा वा  
 रि न्या हो ई ई क ना वि भु क त र ना म ग न्या का स त्री या त म नी ता न् ॥ ५ ॥  
 ॥ श्रेष्ठा नी ता धी को यस्य स त्री या त प्र कु प्यती ॥ त त्य सी त ख रो म् ई १५



त्र काया र्त्तं ग्रह ॥ भुलना विद्यमानस्य मुद्गाभास मजायते ॥  
 तस्य ॥ सत्रीया लोयं सि घृकारिती कथ्यते ॥ नहि जीवत्य होरा त्र म रा म  
 तेगा विद्व विग्रह ॥ इतयो सार्द्ध योरथा वा तक्षे म्मभीक मया को जको ५१  
 सत्रीया त क पित हो ॥ इति तत्र हो मुद्गा हो भोक ला गत मा हो को घास मात्र  
 ५१ प हि नो ना श्रा इ भुत हो घास पनी हो या स ॥ इति घृका ती ना उ ग न्या को सत्री  
 पात ज्ञान ॥ यो सत्री पात असाध्य इ मनी जानु स स सत्री पात लोचन मया का

मध्य जो सत्रीया पात हो ज नैत ता दिक वल को आत ग न्या का ता नु त र मा  
 ला रु द य वि वे दा रु हो क ल जो कि यो आ डा फो क लो रु ती णा प्रा व मे म्र त  
 त गरि ग मि ल पा क हो उ मो उ धो दे वि पी प र त्त बा हि र नी क स ॥ दा त  
 रु रं ॥ म न्यु प नी हा त सत्री पात वि वे र ती वि से क द ॥ १॥ व रु हि रा  
 ती म न्यु स सत्री पातो य दा म वे त ॥ त त्य रो गा स य को ता य थारे  
 ग व ता रे या ॥ प्र ता प य स तं मो रु क पं म र्द्वा र ती प्र मा ॥ म न्या स मे न



मन्मथतत्राप्येतादिसेवरां ॥ यतयोरर्थ ॥ वातवृद्धापीतहिनुक राम  
 ५६ प्रत्यंतमथतवत्तोसत्रीयातहोताहाविनतीमन्याकाश्रयसु  
 तादिकफरोगगान्नताहाविषेप्रतापगरथकाईमानसंमोहहोकास  
 मर्दाहोकेहिमाप्रीतीगरकेहिमाप्रीतीतहो म्रमहोसंताकासंभते  
 राम मन्मथनाहोईतामाहाकिईतीवीसेवद ॥ ११॥ मथप्रवृद्धहि  
 ५६ नैमसत्रीयातोयदामवेत् ॥ तस्यरोगास्तएवोक्तायथारोगवृत्ताश्रया

५ मोहप्रतापमर्दास्यस्ततकंपसिरोग्रहकासश्चासौम्रमसंद्रातज्ञानासो  
 हदिग्रह ॥ वेन्योरक्तविरततीत्रत्राप्येतादिसेवरां ॥ अर्वाकत्रीतन्म  
 न्मथतक्षारात्सुबलोवन ॥ एकीव्याणांनामान्तीयामेककवयादता ॥ ए  
 वामर्थ ॥ वातवाताधीमथपितप्रवृद्धकफहि नभयाकोतवसमीयात  
 होतस्कारोगप्रथममन्याकाश्रयसुतादिकत्रीदेवकाश्रयश्रयगन्या



का ज्ञानुताहा विवेको ह हो प्रलाप गर मर्दा हो कयापनी हो इ न्नी यवातर  
 क बहु मयस संनिपात विवेक रती विषेव ह ये सती पात मया जे ब्रती  
 नदिगा देवी पठे मनु होत क्रा हो भ्राजाना ती या हुन् इती न ॥ संती पात  
 एक याम्य नाम गन्या को १ एक क्रमवना मगन्या को १ एक पात क नाम  
 गन्या काई हुन् ॥ १ ॥ स मै दो बो प्र कु पित संती पात रै के नी बो ध मे ॥

त्रयानाम पीडो बाणासि मरु पारणी तक्षेत्र ॥ त्री ५५ वत्स मवत  
 स धै वा हु स्त्रिया दवत् ॥ यानी नरवी किस्ना मा रुपानी क्तानी इनता  
 म ॥ तै स वै रै व स पुरा गो विने या कु द्पा रत ॥ बा ब बी म्प्रो दा रु गो म्प्र  
 भवत्त स त्वा ग्नि स त्री म ॥ के व तो द्दा स पर मा पुत्रा ग त्त व तो व र ॥  
 त्री त्वा त्पर मे त स्य त तो ह र ती ती वित ॥ त द व स्थ त्त १५ क्ती म जे  
 पा रु र ते त ना ॥ ध वि तो रा स सै नु म म वे ता य वि र ति ति ॥ अ व या वु



वते के विचकिराया वस्त्ररा ॥ वीला वैरुस्य कैवैवतथायै  
मस्तके हर्त ॥ कृतो वार्व नाहिने वधिर्त कृतदैवते ॥ न क्षत्रा पिडा मयरे  
गरकरोत्ती बापरे ॥ वदती सन्निपाते तु भी वत कृत्वा ॥ कृतस्थैता  
यते दो मै वली मि कृत्वा ॥ रमा मरु मथा ॥ वरो वर मया का ती न  
रो व वै रो ते कृत्वा तिम या का सन्निपात कन ज्ञान यो सन्निपात विघ्न ती डो

वतरो वर रुद्र ॥ तीरा ५५ रुद्र इती न्या ५५ इती नि दोष वरो वरो रु  
द्र ॥ वरका सवैत धन रुद्र ॥ यो सन्निपात कन कृत पातल नाम गन्धा  
को मनी रुद्र यो सन्निपात मया या हा के वत रुद्रा समात्र गर स्रंग स  
गि न्या गर मा या पनी ता ॥ यो हे हो ईर है र स सन्निपात ते ती रा दि रा  
यानी का ती वि कन रुद्र यो सो श्रवस्था मया रोगी कन दे वि मुर्ष  
राते य सो मनी रुद्र ॥ श्रवता रुद्रा रा ५५ सता यो म रुद्र क सते



म१२  
५८

काशे मृदु मन्द नृक सैलेश सयक्षि शोको दोष मृदु नृक  
अरु भुजपी सात प्रेत लेया स्का। सिर विवेकानी गयोर सो अरु स्थापा  
या मृदु क सैलेश तदु तदेता साई भाके दत्त गोपी जाग न गन ला ग्या ह नृजो सि हर  
लेत ग्रह को नक्षत्र को पिडा परे ह मृदु गावत्या तेत क पत क सैलेश दि  
या ह मृदु नृता न्या वैच मृता तैत यो क तपो तल नाम गन्या  
को सन्निपात मृदु नृक त म न्या को भी नृप्रा रयत स विवेक स्या

३

अहै तैत स्वानत रुं यो सन्निपात हृद ॥ त स्कार ता हा ॥ १  
तक न कृत पात त नाम गन्या को सन्निपात ॥ ११ ॥ इती त्रयोद सवि  
नीत नीयत ल तिराम ॥ अथ बी कित्सा ह ॥ वृद्ध नैवो विहित स्य  
हाम त्प रुद्रित स्य व क फ स्थाना नु प्रवा यो सन्निपात जरे क्रीया ॥  
ही रा स्य वृद्ध ना जानी वृद्ध योरिती नीक्षय ॥ लय ना इती वृद्ध हित यो



राम वृद्धिर्भव ॥ ततः समः ततोऽप्यारामा मस्थानं कण्ठस्य नु ॥ तत्र स्थाना  
क्रीयात्तद्वद्विजित्वरविनिर्णय ॥ अस्यार्थः ॥ त्रींशोऽष्टविंशेऽप्येव हि नृप  
तत्करावगाऽनुजोऽष्टवद्व्याकोऽह ततः सकरा घटा वनु यत्तो गारिबी  
किं ता कर्मगर्भ ॥ अथ वा कफस्थाने रिक्रमैते बीकिं तागर्भ ॥  
कोनी नयद् ॥ यथा दोषो दुष्टं ॥ तत्र वरगभेऽप्यनुपा नरे ॥ ॥

नीहरेयि तमेवाऽप्येव समवाय ॥ ततोऽप्येव केवधीद्वैत तै ग  
रिभ्रह्मसेव रकोऽप्यय गर्भ ॥ समवायि ज्वरविभेन वैलीया तै क राना  
स गारिगर्भ ॥ दुर्निवारं रंता ज्वर तै व विसेवत ॥ अस्यार्थः ॥ त्री  
शोऽष्टविंशनी वारं गारि सक्त नृद्वैरा विष गारि तो र विषे न दुर्निवा  
यद् ॥ अथ मठभी व निदान ॥ तत्रोपात्तद् धातयो मोक्ष यो पिसा  
नोदरां ॥ सकथं भी क शा र द्युत मे मठे न राधम ॥ अस्यार्थः ॥ सन्नि



राम पात विषे भो काया कारेगी कन ते भी क क मासु भात व वा व स ल्यो म ६१  
 ६१ नुवा मासा अथ म सुध वैध काना म कन क सो ग रिया वता ॥ स न्नी पा  
 ते दू दा हा रां य सि वे दित वारिण ॥ आतुर स क थ जी वे डि व र्वा स क  
 थ भवेत् ॥ अस्यार्थ ॥ स न्नी पात न र वि वे दा ह ते पि दि न्म मया का क ता  
 जो म र्ध सि त न्न त ले ते व न ग र ल्यो रोगी क सो ग रि जी व ता ॥ ल्यो ग न्यो  
 र्ध वै ध प द वि क न क सो ग रिया व ता ॥ स न्नि पा ते न क प ते वि त पं त नु यो

घृत् पाये द्रो ज य आ पी भौ व स्या ता म भौ क थ ॥ अस्यार्थ ॥ स न्नि पा ते  
 ते दा म दा क म वि ला प ग न्यो क न जो म र्ध जी व न्न त सि तं स म ल्प न र वि ग  
 ह ॥ अस्यार्थ ॥ स न्नी पा त ले त वा ह न्या का धा दु व न्या ता त भु व न्यो रोगी क  
 न जो म र्ध वी सो पा नी पी वा व स ल्यो वै ध हो इ ता म ल्यो ॥ अथ वि त मी ध  
 क य स सा ॥ स म द्र त र रां तं द द ह ती भी प र गि ॥ म रा ॥ म ल्यु ना स ह यो  
 इ र्ध स न्नि पा तं क रां वि किं सा ग न्यो क रण वै ध सी त म र्ध वी सी त म र्ध ग र



जोगीतल्योवैचतेरेगकासमहकरातीर ॥ सत्रीमातार्तावेमनेनयो  
 भुवरतीदेहिनी ॥ कलेननरुतीधर्मकावपुतीनलोहती ॥ अस्मार्थ ॥ तम  
 सत्रियातरपसमद्विवेवरथाकोदेहीक नतोउधारगर ॥ तलेकरा १८  
 धर्मगरेतात्मोकडरापुतांससाहतीप्रस्मार्थ ॥ करायेग्यहदेना ॥ इती  
 मीषकप्रससा ॥ भुवस्वीकित्साह ॥ क्षेष्मनिग्रहमेनोपैक्यो  
~~का~~ जा भौत्रीनेवते ॥ तीरले ~~का~~ म ~~का~~ रित्यस्थगोतस्सुघाति

तेमुव ॥ ताघवतायतेसघस्रमावैवोपताम्यती ॥ अस्मार्थ ॥ त्री  
 दोमदेवभयाकोतेगाविवेप्रथमक्षेत्रकोनीग्रहगनुक्षेत्रनीरस  
 मयामाप्रवाहउद्यारिमयामासरिरविवेताघवहुरु ॥ ~~का~~  
 तद्गाविवेत्कीसातलोसमद्रतनरसत्रीमातकोडयोयगनुक्षेत्र  
 होमनी ॥ लंघनवातकास्वेदनस्पनीविवेत्प्रवलेहप्रजन ॥ इती  
 सत्रियातचरविवेप्रथमद्विपवविधीतोतीरगनु ॥ तद्रागोतंघन  
 विधी ॥ श्रीरारात्रेपंचरात्रादसरात्रमथापिवा ॥ लंघनतंनीका



तेषु कय्यागारे ग्यदसनात् ॥ अस्मार्थ ॥ तं धनं गार्त गोसा बह श्रुत  
वै को सामर्थ्य हो दोष सय कभी रत हते तं धनादिक ॥ अस्मार्थ ॥ को  
१३ १३ हो प्रया विवेक को धनी लंबनादिक कन सह हं न कफ योते ईवेधा  
सहे न लं धनं मरुत्प्राप्त मरुत्पाहू मपि वायुन राहते ईशाम  
॥ अस्मार्थ ॥ कफ पित्त मचा ताया धान निराती वडाती ॥ धना कनप  
नी सह हं न रा मरुत्प्राप्त मरुत्पाहू मपि वायुन राहते ईशाम  
धनादिक कन सह हं न ॥ अथाह रास धनत क्षम ॥ गतान्यं ग

गौरवे वहु विकृती हि न लं धने ॥ अस्मार्थ ॥ गतानी हो श्रंग गारौ हो  
॥ विकार वाधार्थ्य कोरु ॥ इतीरु हि न लं धनं का हं न ॥ अथ सम्यक  
लं धन रातत क्षम ॥ प्रकाशा ताये वा गतानी स्वस्थता सुप्रस  
न्नता ॥ उपद्रवनी वृत्ती श्रम्य कलं धीत त क्षम ॥ अस्मार्थ ॥ ईश  
हो सरिर विषे लाघव हो गतानी न हो ॥ स्वस्थता हो ॥ प्रसन्नता हो  
उपद्रव कोनी वृत्ती हो ॥ इती सम्यक लं धीत को त क्षम हो ॥ अथाती  
लं धीत त क्षम ॥ समोह संधी सैथी त्म वात रुक् वाती धीत



अथ स्यात्समो ह हो ॥ रं धी रं धी रं धी ता ह न ॥ वा तरो म राम  
 अती क व ७ ॥ इती वी ह प्रती त धी त वी वे ह न ॥ अथ प प्य वि धान म ६  
 ॥ रा रं सु त धी त स्या दो वि धाय क क न ग्र ह ॥ ता त स क क प र्थ स्या  
 तै ध वे ना म व र्ति त ॥ त व ति र्थ त्प वि धे न त्प र्ति त्ती वे त दा कू वी ॥ इती  
 के ची त् ॥ अथ स्यात्समो ह हो ॥ वा टि या गरि तं घ न ग न्या का क न पु  
 राम ६  
 थ म क म त ग र ग रा उ नु म न त र सी धो न न सा हि त ता था को स क को

पथ प दे नु प्यो वा <sup>ते</sup> प्र वि धे ते पा क ह न्द र स्तो त क सै ते भ न्द न् ॥ र क्त पी  
 क ह र न्दे न दा ह त्प र ह र तं त था ॥ स क्त व सी त वि ध्या स्य ता त पु र्वा हि ता  
 व ते ॥ अथार्थ ॥ क सै ते त य स्तो न्द र स क्त य सि त का रि प द र्प ह न्या  
 द र्प ती स क्त य नी ती रोग वि धे त ॥ ता या स् हि त दै न भ न्द न् ॥ प्रा व  
 नो वि प न्द र त स का र न ते ना तो ती या को द धे ता था को द धा ता था



राम  
६५

कौमंडलपनीदिसमृतादिसेसाधीत्तगन्धाकोपाहितह ॥ यवकोत  
फलस्थानामुहमतकभुथयोत्कैकीभुदिमादायपंवेददगुरो  
जते ॥ पंवेमदीकईयकवातबित्तकफापहा ॥ सम्यत्तेगुल्मभुतेच  
क्षासेकासेधायत्तवरे ॥ प्रत्याहुस्यार्थ ॥ असफात्पाकोशौरषवैरा  
हतमृगमृताकोत्कैकमृदीआठगुरापानीघातीपुषगारिष्वा

६५

नुवातदीतकफगुल्मसुलकासधातजरइतीरोगाविषेपनीपंवेम  
दीकपुठहितकारिह ॥ इतीपंवेमभिकपुष ॥ यवकोतकुलाथे  
मृगामतकमुठके ॥ धान्यकैविषयुक्तैषपुषोवातकफापहा ॥  
तप्तमृदीकईयमसनीपातज्वरापहा ॥ कफवातामसोवृधुकै  
उदरुदकेसाधन ॥ अस्याथ ॥ यवातप्रवयरागहतमृगप्रवला  
वड ॥ धनीयो ॥ मृहोइतीकोत्कैकमृदीगाअथगुरा



पनी घाली पुषना मगरि वानु सनी वात ॥ जर कफ वात आ मुडो  
वकंठ कारो गारु ह्यरोग ॥ इती रोग हर मुख को मुद्रि गर ॥ इती ह ॥  
प्र मुखी क पुष ॥ वात का से छुवी विसृत ती य पारि दे दे रक्त ॥ प्र छ ॥  
नस्य विधी ॥ तर साई कनी या स सम धु व्यो व सै ध वि ॥ मा हा स्ने घ्रा नी  
लो डे क स माना स वि मो क्ष रा ॥ अत्यार्थ ॥ तुलसी ॥ प्र ५ वा ॥ इन्को  
वातो ॥ महत्कर ॥ सै ध व नु न इती प्रौ ष वी को न स दे नु व डो वात क फ

तांत था त ता त सि र ती तां जी हूं म हि म ख्य म धु पी पु या ॥ दा क या स  
ध र्त्त वा स्य ते वे ये त्स नि पा ती न ॥ ध र्त्त ये त्स ज ता सी धु व रौ सा म्भ वे त  
ते ॥ अत्यार्थ ॥ ज व व रौ व र म या का वात क फ ता तु वि षे आ शी त हो रि त  
हो अ धी क दो ष क न ग र्द न जी भो म ओ ह न्द त व फु द्या का त र्ति मा मा  
हा म रु ते य क्त ग रि दा ष पी सी घ त्म धी उ ते त र्ति त दा ष ले प ग नु ज त  
त स र्ति त सी धो नु न त्री क ता प्र स्र वे त र्ती ते म ली त र ह जी भो मा ध



ह्युत्तीक्ष्णदिशो गच्छ ॥ इतीश्रुथ प्रजनविधी ॥ असुगच्छपतंगस्य वित्त  
 पुरा मधु संयुत ॥ प्रजना वृद्धये मुखा तं दितं सन्निपातनीन ॥ अस्यार्थ  
 ॥ वक्रुहो अत्र को पक्षी का विज्ञा को दुरा मरु संगने न प्रजन गनु १०  
 १३ सती पातलो प्रवृत्त भया को तया व ॥ जाती पुष्प प्रवाल व मरिच  
 नि राली ववा ॥ सैव म्रैव वत्स मर्त दिना सन मत्तम ॥ अस्यार्थ ॥ व  
 नली पुवालो मन्त्रिक इ कि वा हो सीधो नून स्तरी एकत्र गरि वता

गनु वा द्वाका ॥ इत तरे याती प्रजन गनु सन्निपात को तं दितं  
 ॥ अत्रो रजस्व तलो धूम जन मरिच तथा गो पी ते न समायु तं तं दि  
 ना सन मत्तम ॥ अस्यार्थ ॥ वृद्ध लसी धुलो से तो तो धूम मरिच स्तरी  
 ओषधी गोरो वन संयुक्त गरि प्रजन गनु सती पातले तद्राता या  
 का उद्यान ॥ सीरिष विज गो मृत्र कुह्मा मरिच सैध्वौ ॥ बोध वैयत्यं त  
 न सुप्रसी न्निपाते न मानुषी ॥ अस्यार्थ ॥ सीरिष को विज पी प्यता मरि



वरसी धोनु नरती श्रौषधी गाई का गोतले मल गरि प्रजन गर्नु सीने  
 पातले सुत्या को मनु धजाग ॥ इती सन्नी पात पर्व विधु क म्मा रिग ॥  
 अथ उद्यत न विधी ॥ अथो ह मे म्म मरु कुल थ वरा नी पाती नै सस्त ११  
 मीती प्रवर्ती ॥ जी ~~रा~~ स क शो ल वरा स्य भा जन न्थे पा प्र ह म र्दन  
 मे त दु त म म ॥ अस्पा र्थ ॥ ज व पा सि ना हु न्या स न्नी पा त हो त भु घा  
 को ग ह त को स र्वे दो वरा सरि र विषे त्त नु अथ वा गाई को जी रा

जल ॥ सन्नी पात वर लं न्या त्र दो स वि धि नु रा ॥ अस्पा र्थ ॥ नु गो द स मती र  
 ती श्रौषधी एक त्र गारिका थ मनु ते ह प्र का र को स नि पा त वर रु र ॥ वि  
 स ती द स व मती ही म पा ठे पी यती प्र य वै ॥ सकि त त कि त वा स ह म य  
 ती ह गै ज स स य ॥ शु व न द स मती न ठि ~~भा~~ गि दि नो म व ॥ का थ पी  
 त स म य ती तो स रु सा वर म य ती न्नी पा ता म्मी ॥ अथ ॥ शु ठि क वर



१८ स मती गुजो वाप्याप्यापीपला इयव कानातीति श्रुतुरोस्ती को वाप  
 वात्री कुटादस मती कुरवमा गा गुजोस्ती श्रौष वद्धा गतिदिवा वापि १४  
 गुत्वर उग्र सति तस न्नीपात रोग हर ॥ तमस्तप रम्यतनु दयादात रोग ते ॥ भूसा  
 स्म वा भुवो स्म वा पूरा दोष को वला वली ॥ अस्माथ मा क मया ॥ सर्वपं व मती को वा  
 थवा तो ज रोग भी मे हितु द ॥ तातो भयापनी मतातो भयापनी ना न को वल हे सिदि  
 मु ॥ इति इत म सुत्रा दिकाथ ॥ ॥ ६ ॥ ~~कानातीति श्रुतुरोस्ती को वाप~~

ते विटे वनं ॥ कं पः प्रल पनं पल्ल शशा ना ल श्व दा हृल ॥ अस्मान्  
 ॥ ॥ गो धन हना अगे प्रा ल म म्पु ल अरि उ म ल रि श्रौ ष ध ट क न  
 गरि मि लि को च्छु ए मि त्रि गि गि का थ कान की वानी ॥ ग च्छु ए  
 दि प्र सं ग पा नु ॥ ला त्रि पा न्ध ए वि षे वि ले ष द्ध वि टे वं द्ध कं प हु दो  
 ध हु ल व ए व द्ध दे जे त ग ल क हा त ए ग ह ॥ इति गो धा दि वि टे व नं  
 ॥ एते च ला व व नै श्व को ॥ रि गे दा श वि त्र नै त र्प पे द्रा क्क पू ए ए ए



लविषा भर्ज ज पे दीप ॥ अस्मा ॥ कावदा सिवत सिद्धि कुला भेगा प्रः  
 एमं सिष ए पा को रित ए को ए ति को मा प्र को ए म् पा दि लेषु वा वनुः एम  
 गा हा व की प्र ए न घी तु ले अ भंग गग नु ॥ वगा ए ह्या द्रु द्रो द्र व्याः  
 टे ले लेषु परि षे च पे त ॥ ता वि ता मा ल व क फे ता नि गा ते ज रे  
 इ ॥ अस्मा ॥ वगा दि ते ए ले ए ह्या दि ते ए ले व नु ग नु आ मः  
 १६ ले क फु ले पु क्त भ या का ता नि पा ल अ ए सा हा भ नि त ए ह्य व ॥ अ १६

पा क ए री धा नि दा ता वि की ला ॥ सं न्री पा ल अ ए र गा ने क ए सि ले  
 लु दा व ए ॥ री धां ले ता पे ते ते न क षि दे व प्र उ अ ते ॥ अस्मा ॥ सं न्री पा  
 ल अ ए भ या उ प्रां त का र का ज ए सा मा क ए सि ले ग म ग मा को री धा व ड म  
 त्र कु च ॥ ता नि का ज भ या का म नु व्ज ग इ त वे क न कु च ए क दु ई मा ला  
 ई प कु दे न ॥ ए का व से च ने पु र सि वि पा ने अ तं ज य त ॥ प्र दे है क फुः  
 वि न्न ये व मि ने क ज ग म हे म् ॥ अस्मा ॥ ए क क ला व नु धि व नी का







त को क त ज ता रु घ स मं ग्रा रु य त् ॥ वा ही का ड क तो य स प्र त मी मं  
 का थ पी वे वै रितं ड स रु र स नी पा त वी म म प्र म्भे ड रु य त् ॥ सो थं क राम  
 रा स म ड वं व वि ष मे सि धु प्र थां ती म ये त नी प्रा ना स क म रु र रो ध त न क स  
 रम १८५  
 १८५  
 श्वा स का सा प त् ॥ रा त्रौ जा गर रा दि वा न स य नी ति का व म र्दा ग ड रु था  
 त स्ते श्म म रु ~~...~~ ज रा रु वी सी रो रु मो रु कं वा ड मो त् ॥ श्री मी न्पा स य त्  
 न यो ड स वि धि सी त ज्व रं थं सि नी जी ह्वा रु था वि त्तु व कं ठ क य त् ग रु ज्व र  
 रा रु रा थ्वा ज्ञानं व म नो वि कार स हि तं म र्दा प्र ता पो ह्वा त्वा रां धा थो रु

तुं ग म त कै ॥ क र्ण सो थ व थ धा धुं सि ले प्र का र्थ स मां स कै ॥ प्र र्ण थ  
 रा रु मा सु थो दे वा र गी न्पा रि वी तो वि नी रा को मु त रु ती थो व धी रु क त्र ग  
 रि क रा सो थ मा तं प्रो नु क रा सो थ रु ॥ मी मि रा को ॥ क त थ क त फू ल  
 सु थं का र वि व स मां स कै ॥ श्री व धी रु क त्र ग रि मी ता तो क रा मु ल मा हा दि  
 का रु फे रा ला व नु क रा मु ल रु ॥ गै रि कं क टि क डि नी सुं ठि क ट फ ल से  
 व वै स ये ॥ उ रु म क र्जी क र पी रे प्र ले प्र क रा मु ल जे त् ॥ प त गै रु क रु त रे  
 या मु ठा का का फू ले रु ती स म ग रि का जी स ग पी ली मं ता री रि ता व नु क रा



मृत्युहर ॥ कफवातज्वरं वा संधि का रुनुग्रह ॥ गतगंडगंडमाता स्व  
 रं मेडकफात्मकं ॥ सीरे गुरुत्वं वा धीर्यं वृद्धिं वकफ सुंदरो ॥ दसमृतयुतो ह्ये राम  
 वत्सनीयातज्वरं ज्वेत् ॥ श्रीमती न्यास सत्तत्त्वकत फहादि निर्हतीव ॥  
 रवापंचानाता म धा ॥ का फल मुथो धीरि वा द्रुपात्पा यवा सो नुवानु कै हवा देवा  
 र हरो का कर भृगी जी षता कना ती तो मुथो वं भा गोई द्रयव क द्रुकि क र कर्द  
 न धनी यो रती स म गरि का थ गरि हि ग भ्रुवा का र स यु क्त गरि नि नु क  
 र्ग मृत दे वि मया को सो थ मं को रोग गता को रोग कफवात ज्वर र्वा स का सो

एत क वत्स विज ग धा मूः न वि डु ग शरिका ह्या दश मूल को क लजता  
 हु च स मं ग्रा हु पेत् ॥ बाही का द्रु क तो प स प्र ता मि सं का या मि वे दे  
 ज्व ए स द्रु स ज्व ए स नि जात वी व म प्र ज्वे द द्रु षा न हं ॥ शो षं क ए स मू  
 द्र वं व वी ष मे दि द्यं प्र आ ती भ मे तु नो प्रा ता ल क मू व ए च त म कं स  
 ध्या त का ला न हं ॥ ए नौ जा ग ए ग दि वा व स ज नी ही कां व मु र्छा  
 ग द हं न्द्रा न्द्र स्ते ए न्द्रा वि दि ए न्द्रो हं कं पा डु मो र्छ



मां वा कृच्छे पटि यवा सो ग्रे धृत्वा नेम्ब आट्ठ व धुडा डिंगे कटु को  
 जने पाल भाग २५ द्या इमी इ प्रकु म्ब विष्णु लजा रे वा पु विडंगरा  
 एह ए ददा मुल रु सै ए जग मा सि ए ती सम भाग ए का ध ग ए हे  
 ग म्ब डु का म्ब नु ला न ग ए का नु तं द्री ज्व ए ल नि पात ज्व ए वो ध म्ब  
 ए डु व प्र म्बे द ए शो य नो द्रा ना ल क म्ब ग ए ध क म्बा ल का ल ए ८०  
 गो वि वे जा यि त दि ध त्रा प मा न कं ट का द ति प्र मा ना द व हे द्रा ट्

तीर म संघ ते व कर सां तुरं ज्वरं दोहिनां ॥ प्र सा र्थ ॥ मुनी म्ब मो थो कु त  
 पुत्रो वा पु त्या मा गु जो सु थो धनी बो जी रो पी प्य ता ग ज रु सा वं मा जो वो जो का  
 परत का कुर म् गी कै रु वा वा मो वा कृ वी पटि य वा सो त्री धृ र्नी म्ब आ र्थ  
 ध म्ब डिंगे कटु कि म्ब जे पा ल भा ग २५ द्या इ ती इ ज म्ब पी प्य त ज रि वा य  
 वि डंग स रि रु रं द स मु त रु धै र ज य मा सि व स ती स म भा ग ग रि का  
 थ ग रि सि ग म्ब डु वा म्ब नु पा न ग रि वा नु तं दि ज्व र स नी पा त ज्व र वि व म







इगना नरि चमरि चका इगना नरु गनु हाति औ न च क क न गरो भारि  
रु न मुनि सु ५ म चू ए न गि र क मा सा नरो अडु वा कारु को अनुपा  
न गा र मा नु क प म्या धि का न नि पात ह म्भु ए ग वि वे न नि वि ले छ छ क  
क ए गा वे वे र वि ले नै छ ॥ इति एते न्यादि चूर्णम् ॥ अथ गुरुिका ॥ वीरुं  
मं का गं कृ ह्मा प ज्या म न वि ज्ञा नि न के ॥ व था ग्ग उ चि भ श्वा मं सं वि व  
चा न्न पो न वे त् ॥ ए ता नी स म आ गा नि प्रो ह्मो न्नु ए व मे व वे त् ॥ गूं जा ५९

भा ग्गु रिका र्ज्वा द द्या द्वा द क जै र ले ॥ पू का म पि ए पु क स्य दे दे वि पु  
चो च यो ज वे त् ॥ अ स्म र्ज्वा ॥ मा पु वि डं म मु ति अ स्व स र्ज्वा द व स्य च त व  
ह नो पा ति त ॥ ग्गु रिका जी व ए ना प्रा स जी व पा ति मा न भ वे त् ॥ अ स्म र्ज्वा ॥  
वा पु वि डं ड ॥ अ ठो गि म्प्य ना ह्मे अ व ला च र्हे जो गो गु र्ज्वा भ य पो अ  
जा यी प प ह ती औ न च ह क न ग रि गौ त ले ज ल ग न्नु अ डु वा कारु म्भ  
नु पा न ग रि वा नु ह क गो लि अ गि नि ए वि वे दे नु डु र्गो लि मि न्नु र्वा च क



एतदनुति न गोति ला जले वा पावे षे दो गु चा गोने लाने पात वी षे क  
 ना जे पाइ छ एला वे डा पु ला मू लाने गुग्गुनि म थ स्त जे प व न ॥ स  
 र ७ ना गां दे व दा व द्या चि त्र क पे षितं ॥ पु ले ज नं मि द म्ने षु ग ए शो थः  
 ति व ह ए न ॥ अ स्था र्थः ॥ ~~शशिग्नं एति कां मि द्वां क ए पु ले ज न म्ना मि~~ ए  
 ८२ मि षं गा की ति नि न्ने ~~क क ह न्ना~~ वि मि ए को त ए मि द्वा ए क ठो दे का ए वो ८२  
 हो चि तो ह ति ह क त्र ग ए ले ज न ना तु क र्त्त म्ना ह ए ॥ शशिग्नं एति कां

पि ष्यं क ए पु ले ज न म् ॥ मी षं गा की ति नि न्ने क र्त्ता सो प थु ना  
 स न म् ॥ अ स्था र्थः ॥ मै ज न रा या पी ति ले प त न् क र्त्ता स्व थ ह र ये  
 प्रो ष व त्रे ह ॥ क र्त्ता म्ना त प सो था इ त्त यो प रि कि ति तं ॥ क र्त्ता  
 वी त्त ज्जी य त वे धै स वा ज य त्वा र्त्त ॥ अ स्था र्थः ॥ क र्त्ता म्ना वि  
 वे ज्ता सो थ इ त्त प न ह ~~ह~~ द्वा न श क क्त्ते नी का ग ए स क क्त्ते  
 वे ध न क प वी त्त यो ज्जी त्ति स क म् कि र्त्ता म्ना सो थ त रो



जी

गी करण जी तू ॥ इती करण मल करण सो धवी कि त्ता ॥ म  
 धस पात प्रहम ॥ सत्री प्रातं स मती यो जी वदि मानवा ॥ धी री  
 जो वल मासा निरि रा इम भुसि रो रुह स्वर वरा परि भु रू धी रा ॥ ५३  
 भु क्रो नी रि प्रिय ॥ अथक्त वा विवरा भु मंड वृद्धि भ वल्य सो ॥  
 सत्री पात न दग्ध श्वी रा ज्ञाप्य य ने नर ॥ क्छा सप्रा जना य श्व पु  
 ५३ ननु माहि तस्य तत् ॥ एते वाम थ ॥ सत्री पात म वा पद्धि जी ३

नी संग का फल प्रमान गुदिकार्गर्धन सर्व रुम जा ॥ श्रुवा भी रंगी को ॥  
 पुरानी धुवा को बुक मन रुह दिकार मले फा वनु ते सै मा पुरा नै ना कि पुं मोरो  
 काधु तो घाली फा वनु फेरी ते सै मा भाग पुराय निन जे प्रकल हात नु सा है गव्या  
 को मये हुनी का को पानी म्रकल सग घालनु सवै भी रंगी नी को होये को प  
 नी नी प्रोत् ॥ सुक म्यल प्रीय गु सु हो वय स को विया प्री परि श्री धंड वा व  
 का वा वल वंग नाग के सर सम माग पुरा गदि द्वा थ वानु ॥ इ पतली जाग  
 भु म राम राम सीता सन के ह्म



यादृसिपुस्तकं दृष्ट्वा तादृसीनी धीर्तमया ॥ ~~स्वर्ग~~ जादिसुद्धमशुद्धिमा  
ममपोषो न दियते ॥

आशा सरकाथि

2.308

ASHA ARCHIVES